तब हार के धनिएं विचारिया, क्यों छोडूं अपनी अरधंग।
फेर बैठे मांहें आसन कर, महामति हिरदे अपंग।। ११ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि तब हार कर धनी ने ही विचार किया कि मैं अपनी अंगना को क्यों छोडूं? तब मेरे टूटे हुए हृदय में आकर विराजमान हुए।

।। प्रकरण ।। ९९ ।। चौपाई ।। १४८२ ।।

धनी एते गुन तेरे देख के, क्यों भई हिरदे की अंध।
कई साखें साहेदियां ले ले, याही में रही फंद।। १ ।।

हे धनी! आपकी इतनी कृपा देखकर भी मेरा हृदय अन्धा बना रहा। कई गवाहियां लेकर भी मैं इसी माया के फन्द में लगी रही।

कई साखें लई धनी की, कई साखें लई फुरमान।
कई साखें लई सास्त्रन की, अंतस्करन में आन।। २ ।।

धनी की, कुरान की और शास्त्रों की दिल में कई गवाहियां लीं।

कई साखें साधुन की, कई साखें सब्द ब्रह्मांड।
आतम मेरी अनुभव से, लगाए देखी अखंड।। ३ ।।

साधुओं की वाणी और अपने अनुभव से मैंने अपने दिल को अखण्ड परमधाम में लगाकर देखा।

जो कोई कबीला पार का, सो सारों ने दई साख।
धनी मुन आए आतम नजरों, सो कहे न जाए मुख भाख।। ४ ।।

पार के रहने वाले जितने सुन्दरसाथ हैं, उन सबने गवाही दी। तब अपने ऊपर धनी की कृपा देखी उसका क्या वर्णन करूं? उससे अखण्ड घर नजर आया।

कई साखें गुन विचार विचार, बिध बिध करी पुकार।
तो भी घाव कलेजे न लग्या, यों गया जनम अकार।। ५ ।।

कई गवाहियां सोच-सोचकर दीं और पुकार-पुकारकर मुझे समझाईं पर मेरे कलेजे में कोई चोट नहीं लगी। मेरा जन्म व्यर्थ चला गया।

कई साखें गुन मुख केहे केहे, उमर खोई मैं सब।
अजूं आतम खड़ी ना हुई, क्यों पुकारूं मैं अब।। ६ ।।

कई गवाहियां और अपने मुख से धनी की कृपा का वर्णन औरों को सुना-सुनाकर उम्र बिता दी, फिर भी मेरी आत्मा जागृत नहीं हुई तो औरों को क्या कहूं? क्या सुनाऊं?

अब दिन बाकी कछू ना रहे, सो भी देखाए दई तुम सरत।
क्यों मुख उठाऊं आगूं तुम, चरनों लागूं जिन बखत।। ७ ।।

हे धनी! अब घर वापस आने में कोई समय बाकी न रहा। उसकी भी आपने पहचान करा दी है। अब घर आकर जब आपके चरणों में लगूंगी तो आपके सामने मुंह कैसे ऊंचा करूंगी?

ज्यों ज्यों तुम कृपा करी, मैं त्यों त्यों किए अवगुन।
तिन पर फेर तुम गुन किए, मैं फेर फेर किए विघन।। ८ ।।

हे धनी! जैसे-जैसे आपने कृपा की, वैसे-वैसे मैंने अवगुण किए। फिर भी आपने तो मेहर ही की मैंने तो फिर भी बाधाएं ही डालीं।

Nijanand App

गुन धनी के गाते गाते, गई सारी आरबल।
अवगुन अपने भाखते, उमर खोई न सकी चल।।९।।

धनी के मेहर के गुण गाते-गाते सारी आयु व्यतीत हो गई। अपने अवगुणों को बताते-बताते भी उम्र गंवा दी पर तन न छोड़ सकी।

अब हुकम होए धनी सो करूं, मेरा बल न चले कछू इत।
सुरखरु तुम करोगे, पुकार कहे महामत।।१०।।

अब श्री महामतिजी कहते हैं धनी! आपका जो हुकम हो, वही अब मैं करूं? मेरा बल इस माया में चलता ही नहीं है। अब तुम ही सामने आने की शक्ति दोगे तब मैं आपके सामने आ सकूंगी। ऐसी मेरी बार-बार प्रार्थना है।

।। प्रकरण ।। १०० ।। चौपाई ।। १४९२ ।।

राग श्री

साथ जी सुनो सिरदारो, मुझ जैसी न कोई दुष्ट।
धाम छोड़ झूठी जिमी लगी, चोर चंडाल चरमिष्ट।।१।।

हे मेरे सिरदार सुन्दरसाथजी! सुनो, मेरे जैसा कोई दुष्ट नहीं है। मैं अखण्ड घर के सुखों को छोड़कर झूठी माया में लगी रही। मैंने चोर, चांडाल और ऊपरी मान-मर्यादा वालों जैसा काम किया।

प्रेम खोया मैं बानी कर कर, हो गया जीव कोई भिष्ट।
साथ के चरन धोए पीजिए, ताको दिए मैं कष्ट।।२।।

मैंने धनी की वाणी को बार-बार सुनाकर अपने जीव को भ्रष्ट कर दिया है। जिन सुन्दरसाथ के चरण को धोकर पीना चाहिए, उनको मैंने कष्ट दिया।

मुख बानी केहेलाई बड़ी कर, मांहें ब्रह्म सृष्ट।
पंथ पैंडे संसार के ज्यों, होए चलाया इष्ट।।३।।

ब्रह्मसृष्टियों में मुझे बड़ा बनाकर मेरे मुख से वाणी कहलाई और संसार के पंथ-पैंड़ों की तरह ही एक धर्म का इष्ट बनकर नया धर्म चलाया।

ले पंडिताई पड़ी प्रवाह में, कर कर ग्यान गोष्ट।
न्यारा हुआ न नेहेकाम होए के, मैं लिया न निरगुन पुष्ट।।४।।

मैंने पण्डितों की तरह ज्ञान गोष्ठी (शास्त्रार्थ) की। माया की चाहना छोड़कर मैं अलग नहीं हो सकी और दृढ़ता के साथ पारब्रह्म को नहीं लिया।

अनेक अवगुन किए मैं साथसों, सो ए प्रकासूं सब।
छोड़ अहंकार रहूं चरनों तले, तोबा खैंचत हों अब।।५।।

मैंने सुन्दरसाथ से बहुत अवगुण किए हैं। उनका मैं बखान करती हूं। अपने अहंकार को छोड़कर सुन्दरसाथ के चरणों में ही रहूंगी। इस तरह से मैं अपनी भूल मानती हूं।

एते दिन धनी धाम छोड़ के, दई साथ को सिखापन।
अब साथें मोको समझाई, तिन थें हुई चेतन।।६।।

इतने दिन तक मैं धाम-धनी को छोड़कर सुन्दरसाथ को समझाती रही। अब सुन्दरसाथ ने मुझे समझाया, तब मुझे होश आया।

Nijanand App